IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"आत्मनिर्भर भारत में महिला उद्यमियों का योगदान"

नीति तिर्की,
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची।

शोध सार : भारत में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। भारत जैसे विकासशील देश में हमेशा से ही उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वदा ही पुरूष प्रधान रही है, और महिलाओं को एक उद्यमी के तौर पर हमारे रूढ़िवादी समाज में बड़े पैमाने पर उपेक्षित किया गया है। महिलाओं को सदैव ही एक गृहिणी के रूप में देखा व स्वीकार किया जाता रहा है, लेकिन परिस्थितियाँ अब वैसी नहीं है। महिलाएँ न केवल उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी सहभागिता दिखा रही है, बल्कि वैसे क्षेत्रों में अपने पांव जमा रही है, जो पुरूष वर्चस्व वाले रहे हैं। हालाँकि भारत में वर्तमान समय 20% उद्यम ही महिलाओं के स्वामित्व वाले हैं तथा तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद भी महिला उद्यमियों की संख्या कम ही है। केवल 6% महिलाएं ही भारतीय स्टार्टअप्स की संस्थापक हैं। एक राष्ट्र के निर्माण में जितना योगदान पुरूषों का होता है, उतना ही अहम् योगदान महिलाओं का भी है। आत्मनिर्भर भारत में महिला उद्यमियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। अतः वर्तमान समय में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनाना समय की मांग है। महिलाएं सशक्त होगी, आत्मनिर्भर बनेगी तभी राष्ट्र आत्मनिर्भर बनेगा। महिला अधिकारों की मांग से शुरू हुए आंदोलनों के साथ, तथा पुरूष वर्चस्व वाले क्षेत्रों सहित सभी क्षेत्रों में स्वयं को साबित करने के लिए महिलाओं ने एक लम्बा सफर तय किया है। महिलाएँ किसी भी राष्ट्र के समग्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उद्यमियों ने समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण को भी प्रभावित किया है और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के साथ हो रहे लिंग–पक्षपाती तरीकों में अंतर को कम कर दिया है। आज समाज में नेतृत्व और उद्यमशीलता की भूमिका में महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए समाज, सरकार और स्वयं महिलाएं भी प्रमुख भूमिका निभा रही है। एक ओर जहाँ शहर में महिलाएँ, पर्यटन, शिक्षण, सौंदर्य फैशन, इंटीरियर डिजाइनिंग, इंजीनियरिंग में बखूबी मोर्चा संभाल रही है, वहीं ग्रामीण महिलाएँ संगठित होकर सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम क्षेत्रों में अपना बेहतर प्रदर्शन कर रही है। वर्तमान समय में महिला उद्यमिता को बढ़ाने के लिए भारत सरकार, बैंक व राज्य सरकारों द्वारा स्त्री शक्ति पैकेज, उद्योगिनी योजना, महिला उ़द्यमनिधि योजना, स्टैंड–अप इंडिया योजना, महिला ई–हाट, महिला बैंक, महिला उद्यमिता मंच (WEP), महिला कॉयर बोर्ड इत्यादि जैसी योजनाओं के मध्याम से महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने की पहल की है। महिलाओं के उद्यम क्षेत्र में आगे आने तथा सरकार द्वारा निरंतर आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उद्यमी महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण हो गई है।

शब्द कुंजी – महिला उद्यमी, भारतीय अर्थव्यवस्था, आर्थिक विकास, आत्मनिर्भर भारत, रूढ़िवादी समाज, महिला सशक्तिकरण।

परिचय :–

भारत एक सम्पन्न परंपरा तथा सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध एक राष्ट्र है, जहाँ महिलाओं का भी समाज में प्रमुख स्थान रहा है। भारत में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है तथा इनका भी राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है, आजादी के पश्चात् हालांकि महिलाओं के सशक्तिकरण की गति धीमी रही है जिसमें गरीबी व निरक्षरता महिलाओं के प्रगति में बाधा बनी। वर्तमान में महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर से प्रोत्साहित कर उन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा रहा है। इससे महिलायें सशक्त होगी तथा देश

भी सशक्त व आत्मनिर्भर होगा। आज ज्यादातर महिलायें स्वयं को महिला उद्यमी के रूप में प्रस्तुत कर रही है। वर्त्तमान समय में भारत में महिलाओं ने आत्मनिर्भर शब्द की सही परिभाषा को गढ़ते हुए एक नया मुकाम हासिल की है। महिला उद्यमिता से तात्पर्य किसी भी देश के लिए आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए उस देश की महिलाओं की सहभागिता से है। इस सहभागिता के परिपेक्ष में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा है – **"जब कोई महिला आगे बढ़ती है, या उन्नति करती है तो उसका परिवार उसका गाँव, शहर सभी उन्नति करते हैं और उनके साथ देश भी उन्नति करता है।**[1] अतः महिलाओं की सहभागिता उद्यम के क्षेत्र में महिला उद्यमी के रूप में अति आवश्यक है। साधारण शब्दों में महिला उद्यमी, एकल महिला या महिलाओं के समूह के द्वारा जोखिम के साथ व्यवसाय की स्थापना, प्रबंधन और संचालन से हैं या स्थापित व्यवसाय में 51% या उससे अधिक की हिस्सेदारी, स्वामित्व, साझेदारी व नियंत्रण से है।

उद्देश्य :–

- आत्मनिर्भर भारत में महिला उद्यमियों के योगदान का आंकलन करना।
- महिला उद्यमियों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का पता लगाना।
- उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं के लिए उपलब्ध अवसरों की पहचान करना।

शोध पद्धति :–

यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक प्रकृति का है। तथ्य संकलन, द्वितीयक स्रोत द्वारा एकत्रित किए गए है। यह भारत में उद्यमी महिलाओं के अहम योगदान को दर्शाने का प्रयास है।

भारत में महिला उद्यमी :–

भारत जैसे विकासशील देश में हमेशा से ही उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय अर्थव्यस्था सर्वदा ही पुरुष प्रधान रही है और महिलाओं को एक उदयमी के तौर पर हमारे रूढ़िवादी समाज में बड़े पैमाने पर उपेक्षित किया है। महिलाओं को सदैव ही एक गृहिणी के रूप में देखा व स्वीकार किया जाता रहा है, लेकिन परिस्थितियां अब वैसी नहीं हैं। महिलाएं न केवल उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी सहभागिता दिखा रही है बल्कि वैसे क्षेत्रों में अपने पाँव जमा रही हैं, जो पुरुष वर्चस्व वाले रहे हैं। हाल के दशकों में भारत में तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद महिला उद्यमियों की संख्या काफी कम है। हालांकि भारत में वर्तमान समय 20% उद्यम ही महिलाओं के स्वामित्व वाले हैं जो कि प्रत्यक्ष रूप से 22 से 27 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। यह कहा जा सकता हैं कि 100 में से 7 महिलायें उद्यमी है और ये महिला उद्यमी ना केवल पुरुषों के समकक्ष कंधे से कंधे मिलाकर प्रतिस्पर्धा कर रही है बल्कि अपने विचारों व निष्पादन तकनीकों में भी उत्कृष्ट है। बैन एण्ड कंपनी और गूगल की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिला उद्यमी अगले 2030 तक 150 से 170 मिलियन नौकरियाँ उत्पन्न कर सकती है, परंतु इसके लिए सरकारी नीति, वित्त पोषण सहित की आयामों में एक समन्वित बहुहितधारक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।[2] वर्तमान समय में कोविंड–19 ने इस प्रतिशत को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। इस दौरान बेरोजगारी में बढ़ोतरी देखी गई साथ ही कुछ चुनोतियों को भी सामने लायी, जैसे दूरस्थ कार्य मॉडल की स्वीकृति, मांग और आपूर्ति पक्ष में डिजिटल चैनलों के उपयोग में तेजी, डिजिटल बनाम भौतिक बातचीत में बदलाव इत्यादि। केवल 6% महिलाएं ही भारतीय स्टार्टअप की संस्थापक हैं। भारत में महिला उद्यमी, प्रतिभा के धनी है, लेकिन महिला सस्थापकों के साथ भारतीय स्टार्टअप कुल फन्डिंग का केवल 1.5% ही प्राप्त कर पाते हैं। क्षेत्रवार प्रतिनिधित्व वाले व्यापार के स्वामित्व के मामले में भारत के विनिर्माण क्षेत्र जो मुख्य रूप से कागज और तंबाखू उत्पादों से सबंधित है, में महिलाओं द्वारा धारित हिस्सेदारी 50% से अधिक है। हालांकि कंप्युटर, मोटर वाहन, धातु उत्पादों, मशीनरी और उपकरणों से संबंधित उद्योगों में महिलाओं की हिस्सेदारी 2% या उससे भी कम देखी

जाती है। वर्तमान समय में महिला उद्यमिता को बढ़ाने के लिए भारत सरकार, बैंक व राज्य सरकारें द्वारा स्त्री शक्ति पैकेज, उद्योगिनी योजना, महिला उदयम निधि योजना, स्टैंड–अप इंडिया योजना, महिला ई–हाट, महिला बैंक, महिला उद्यमिता मंच (WEP), महिला कॉयर बोर्ड, स्टार्टअप इंडिया पहल इत्यादि जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने की पहल की है।[3]

आत्मनिर्भर भारत में महिला उद्यमियों का योगदान :–

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मई 2020 में भारत को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने की दृष्टि से 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की शुरुआत की। इसके अंतर्गत कहा गया कि एक उच्च विकास के प्रक्षेपवक्र इरादे, समावेश निवेश के माध्यम से ही संभव है तथा इसके साथ ही भारत के आर्थिक विकास में बुनियादी ढांचे और नवाचार और सभी किसानों, छोटे व्यवसायों और उद्यमियों को एक साथ आगे आने की बात कही।[4] वर्तमान भारत में छोटे– बड़े सभी स्तर पर महिला उद्यमी अब आगे आ रही है तथा देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे रही है। महिलायें समाज की रीढ़ होती है तथा समाज को आकार देने में सकारात्मक भूमिका निभाती है। आज समाज में महिला उद्यमियों की भूमिका अहम हो गई है और समाज में भी महिला उद्यमियों को लेकर सोच में बदलाव को देखा जा रहा है। वे देश के आर्थिक वृद्धि में अपना योगदान दे रही है। खासकर सरकार द्वारा शुरू की गई स्कीमें जैसे स्टार्टअप इंडिया, स्टैन्डअप इंडिया इत्यादि से महिला उद्यमियों को काफी मदद मिली है और इससे अर्थव्यवस्था की वृद्धि को भी गति मिली है। महिला उद्यमी ना केवल खुद को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर को बढ़ाती है। आर्थिक सर्वेक्षण से ज्ञात है कि देश में 2016 के बाद से बने 60 हजार से ज्यादा स्टार्टअप्स में, 45 प्रतिशत के पास कम से कम एक महिला निदेशक है। 2019 के महिला उद्यमी सूचकांक के 57 देशों में से 52वां स्थान रहा।[5] नेशनल सैंपल सर्वे के अनुसार भारत में केवल 14 प्रतिशत भारतीय व्यवसाय महिलाओं द्वारा संचालित है। सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं के योगदान के मामले में भारत में 17 प्रतिशत है। इस प्रकार कहा जा सकता है उद्यमी महिलाओं के सक्रिय भागीदारी से महिला स्वामित्व वाले व्यवसाय अगले पाँच वर्षों में काफी बढ़ गई है। आत्मनिर्भर भारत अभियान में ग्रामीण महिलायें भी पीछे नहीं है, वे कृषि, पशुपालन, सिलाई, लघु उद्योगों इत्यादि का व्यवसाय कर अपने परिवार व राष्ट्र की समृद्धि में अहम भूमिका निभाई हैं। अतः आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो गया है।[6]

महिला उद्यमी बनने हेतु प्रोत्साहित करने वाले कारक :–

- आर्थिक रूप से स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर होना
- लैंगिक असमानता को समान करने के लिए उद्यमिता का रुख लेना
- समाज में अपनी पहचान बनाना व आत्मसम्मान पूर्ण जीवन की चाहत
- जोखिम उठाने की क्षमता रखना
- अन्य उद्यमी महिलाओं की उपलब्धि से प्रेरित होना
- अन्य उद्यमी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत होना
- सीमित आय के स्रोत होना
- उच्च शिक्षा व योग्यता का अभाव तथा कुशलता में निपुण होता
- अधिक स्वतंत्रता और गतिशीलता को सुरक्षित करने के लिए
- अतिरिक्त आय की आवश्यकता होना
- परिवार के लिए आधार स्तम्भ बनना

- सरल व सहज सोच

महिला उद्यमियों के समक्ष चुनौतियाँ/बाधाएँ :–

- **सामाजिक और वित्तीय सहायता का अभाव** – महिला उद्यमियों के पास वित्त का अभाव होता है। महिला उद्यमियों के नाम पर कोई संपत्ति नहीं होती है तथा बाहरी फन्डिंग स्रोतों तक भी उनकी पहुँच नहीं होती है। भारत में फन्डिंग के क्षेत्र में लैंगिक पक्षपात चरम सीमा में देखने को मिलता है, महिला निवेशकों वाले व्यवसायों में निवेशकों की रूढ़िवादिता के कारण भी पूंजी तक उनकी पहुँच नहीं होती है।
- **कच्चे माल की कमी** – किसी भी उत्पादन कार्य के सफलतापूर्वक संचालन के लिए कच्चे माल की उपलब्धता होना अत्यंत आवश्यक है। विक्रेता उन्हीं फर्मों को पहली प्राथमिकता देते हैं जो पुरुष उद्यमियों द्वारा संचालित किए जाते हैं। निर्माण कार्य के समय गुणवत्तापूर्ण एवं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध ना हो पाना भी एक बड़ी समस्या है, जिसका सामना प्रत्येक महिला उद्यमी द्वारा किया जाता है।
- **उच्च प्रतिस्पर्धा** – उद्यमिता क्षेत्र दोनों ही महिला और पुरुष द्वारा शासित क्षेत्र है। वर्तमान समय में पुरुष प्रभुत्व वर्ग से प्रतिस्पर्धा करते हुए अपने व्यवसाय को मजबूती से बनाए रखना भी एक बहुत बड़ी चुनौती है। महिला उद्यमियों को अलग स्थान बनाने के लिए हर वक्त स्वयं को साबित करना पड़ता है।
- **प्रबंधकीय क्षमता का अभाव** – किसी भी उद्यम के सफल संचालन के लिए आवश्यक है कि उसमें प्रबंधकीय गुण हो। प्रबंधकीय क्षमता से युक्त उद्यमी के द्वारा उद्यम का सफल संचालन हो सकता है। एक महिला द्वारा संचालित उद्यम की क्रिया पूर्ण रूप से कुशल भी हो सकती है या नहीं भी। ज्यादातर व्यवसाय में होने वाली गतिविधि को पर्याप्त समय देने में सक्षम नहीं होने से ही महिला उद्यमी पिछड़ी हैं।
- **उद्यमी प्रवृति का अभाव** – महिलाओं में सामान्यता पुरुष उद्यमी के समान जोखिम लेने नए विचारों लाने व क्रियान्वित करने में एवं साहस पूर्ण कार्य संचालन जैसे उद्यमशील विशेषता व गुणों का अभाव पाया जाता है।
- **जोखिम वहन करने की क्षमता में अभाव** – हमारे समाज में महिलाओं को शुरुआत से ही घर की चारदीवारी में एक सुरक्षित जीवन दिया गया है, जिससे वे सुरक्षित जीवन की अभ्यस्त हो चुकी है। उद्यमिता एक जोखिम भरा कार्य है तथा महिलाओं में जोखिम वहन करने की क्षमता का अभाव देखा जाता है।
- **कानूनी प्रक्रिया** – किसी भी व्यवसाय को प्रारंभ करने के लिए एक लंबी औपचारिक प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ता है, जिसमें बहुत ज्यादा समय व श्रम की आवश्यकता होती है। महिला उद्यमी के लिए यह भी एक चुनौती है।
- **परिवार और कार्य जीवन में संतुलन** – महिलाओं को अक्सर घरों व परिवारों को संभालने वाली के रूप में देखा जाता रहा है। इसे महिलाओं का प्रधान कर्तव्य माना गया है। बच्चों व परिवार के सदस्यों के पालन पोषण के साथ उनके पास व्यवसायिक गतिविधियों के लिए काफी कम समय होता है, साथ ही उनके परिवार का शैक्षिक स्तर, जीवन साथी का व्यवसाय एवं समाज की सोच दोहरी मानसिकता, उसकी प्रगति में सदैव बाधक रही है। जब वे व्यवसाय में उतरती है तो उनकी प्रथमिकताएं व दैनिक क्रियाकलाप में बदलाव आ जाता है परिवार व कार्य जीवन में संतुलन बना कर चलना अपने आप में एक चुनौती है।
- **पुरुष प्रधान समाज** – भारतीय समाज हमेशा से ही पुरुष प्रधान रहा है जहां कभी भी महिला पुरुष को समान नहीं देखा गया। पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम आँका गया और उसे पुरुषों के अधीनस्त देखा गया। अतः पुरुष प्रभुत्व वाले क्षेत्र में महिलाओं को अपने पैर जमाने के लिए महिलाओं को निरंतर संघर्ष करनी पड़ी है।

भारत में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में सरकार द्वारा किए गए प्रयास :–

वर्तमान समय में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अनेकों प्रयास किए गए हैं। सरकार द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं में लघु क्षेत्र सहित सभी सरकारी व गैर सरकारी संगठनों में महिलाओं के विकास को प्राथमिकता दी है। प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जहां महिला विकास हेतु कई उपायों की कल्पना की गई थी, जिसे आगामी योजनाओं में साकार करने का प्रयास किया गया, जैसे तीसरी योजना में शिक्षा पर बल एवं सातवीं योजना में लैंगिक समानता पर बल दिया गया। आठवीं योजना में महिला सशक्तिकरण पर बल दिया गया। नवीं योजना में महिला घटक नीति बनाई गई, जिसमें महिला को विकसित करने हेतु महिला सबंधित क्षेत्रों को 30 प्रतिशत का लाभ प्रदान की जाने की बात कही गई। इस प्रकार कई योजनाएं व नीतियाँ महिला विकास हेतु बनी है, जो निम्न है –

- खादी और ग्रामोउद्योग आयोग (KVIC)
- महात्मा गांधी, ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान (MGIRI)
- राजीव गांधी, महिला विकास परियोजना (RGMVP)
- एस बी आई की स्त्री शक्ति योजना
- महिला विकास निगम
- महिला विकास कार्यक्रम (EDP)
- महिला समिति योजना
- इन्द्रा महिला योजना
- इंदिरा महिला केंद्र
- राष्ट्रीय महिला कोष

इसके अलावा सरकार ने कई अन्य पहल की है, जिससे महिला उद्यमी क्षेत्र में आगे आए–

- महिला उद्यम निधि योजना
- स्टैन्ड अप इंडिया योजना
- महिला ई–हाट
- उद्योगनी योजना
- महिला बैंक कॉयर योजना
- महिला उद्यमिता मंच
- अन्नपूर्णा योजना
- सेंट कल्याणी स्कीम
- मुद्रा योजना स्कीम
- देना शक्ति स्कीम
- ऑरिएंट महिला विकास योजना स्कीम
- भारतीय महिला बैंक बिजनेस लोन, इत्यादि

महिला उद्यमियों के विकास हेतु सुझाव :–

महिला उद्यमी द्वारा उद्यम क्षेत्र में सामना की जाने वाली समस्याओं के कुछ उपाय तथा सुझाव निम्न है। महिला उद्यमियों को आगे लाने के लिए केवल आर्थिक मदद करना काफी नहीं है, परंतु पुरुष प्रधान समाज द्वारा सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक हर स्तर पर अपनी दृष्टिकोण बदलने की जरूरत है। जहां सदैव महिला को दोयम दर्जे का माना गया है। महिलाओं को विकसित करने के लिए जितनी आवश्यकता कार्यक्रम एवं नीति बनाने, व समान अवसर प्रदान करने की है, उससे कहीं ज्यादा समाज द्वारा महिलाओं के प्रति अपने सोच के दायरे को बढ़ाने की है।

- समाज को रूढिवादी सोच से बाहर निकल कर महिलाओं की नवाचार से जुड़ी सोच व प्रयासों को बढ़ावा देना।
- लैंगिक भेदभाव दूर करना।
- सकारात्मक वातावरण प्रदान करना।
- सरकार द्वारा महिला विकास हेतु प्रोत्साहन, जागरूकता कार्यक्रम बनाना व संचालित करना।
- शैक्षिक स्तर को ऊंचा उठाना और शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना।
- महिलाओं की क्षमता की पहचान कर उसके गुणों को निखारना जिससे वह स्वयं व्यवसाय की शुरुआत कर सके।
- महिला को उदार शर्तों पर ऋण उपलब्ध करना।
- महिला के विकास हेतु सभा सम्मेलन, संगोष्टी का आयोजन समय समय पर करना जिससे उन्हें व्यक्तित्व विकास के साथ साथ व्यवसाय के सफल संचालन के लिए आवश्यक जानकारी मिल सके।
- नवीनतम तकनीकों की जानकारी महिला उद्यमियों को प्रदान करना ताकि इनका प्रयोग कर महिलाएँ अपने व्यवसाय को उन्नत कर सकें।

भारत की सफल महिला उद्यमी :–

आज महिलाओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लगभग हरेक क्षेत्र में उन्होंने अपना प्रभाव व छाप छोड़ा है। कुछ सफल महिला उद्यमी जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए कुछ अलग किया है तथा अन्य महिलाओं को प्रेरित किया है।

- वंदना लूथरा – VLCC की संस्थापक
- किरण मजूमदार – बायोकॉन लिमिटेड की निदेशक
- प्रिया पॉल – पार्क होटल की चेयरपर्सन
- ऋतु कुमार – फैशन डिजाइनर
- सुची मुखर्जी – लाइमरोड की संस्थापक और सीईओ
- इन्द्रा नुई–पेप्सिको की पूर्व सीईओ, अमेजन की बोर्ड सदस्य
- फाल्गुनी नायर–नायका की संस्थापक
- ऋचा कौर–जीवामे की संस्थापक (ऑनलाइन लांजरी स्टोर)

निष्कर्ष :–

आज भारत में महिला उद्यमिता का परिदृश्य बदल गया है। हम स्टार्टअप्स, डिजिटलिकारण और वैश्वीकरण के युग में भारत में महिला उद्यमियों की संख्या में क्रांति को देख सकते है। एक राष्ट्र के निर्माण में जितना योगदान पुरुषों का होता है, उतना ही अहम् योगदान महिलाओं का भी है। आत्मनिर्भर भारत में महिला उद्यमियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। महिला सशक्तिकरण हेतु किए गए तमाम प्रयासों के बावजूद महिलाओं को जीवन एवं कार्य के क्षेत्र में निर्विवाद रूप से संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है, पितृसत्ता का प्रभाव अभी भी देखने को मिलता है। अतः वर्तमान समय में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनाना समय की मांग है। महिलाएं सशक्त होंगी, आत्मनिर्भर बनेगी तभी राष्ट्र आत्मनिर्भर बनेगा। महिला अधिकारों की मांग से शुरू हुए आंदोलनों के साथ तथा पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रों सहित सभी क्षेत्रों में स्वयं को साबित करने के लिए महिलाओं ने एक लम्बा सफर तय किया है। महिलाएं किसी भी राष्ट्र के समग्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उद्यमिता ने समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण को भी प्रभावित किया है और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के साथ हो रहे लिंग–पक्षपाती तरीकों में अंतर को कम कर दिया है, परंतु भारत को $5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए महिलाओं द्वारा उद्यमिता को आर्थिक विकास में एक बड़ी भूमिका निभानी होगी। भारत में लिंग संतुलन भी काफी कम है, जिसे सुधारना ना केवल लैंगिक समानता के लिए बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। आज समाज में नेतृत्व और उद्यमशीलता की भूमिका में महिलाओं को सक्षम बनाने में समाज, सरकार और स्वयं महिलाएं भी प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। एक ओर जहाँ शहर में महिलाएं, पर्यटन, शिक्षण, सौंदर्य व फैशन, इंटीरियर डिजाइनिंग, इंजीनियरिंग में बखूबी मोर्चा संभल रही हैं, वहीं ग्रामीण महिलाएं संगठित होकर सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम क्षेत्रों में अपना बेहतर प्रदर्शन कर रहीं हैं। उद्यमियों के रूप में महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने से देश का आर्थिक विकास हुआ है। महिलाओं के उद्यम क्षेत्र में आगे आने तथा सरकार द्वारा निरंतर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उदयमी महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण हो गई है।

संदर्भ सूची

1. https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/shibulal-family-philanthropic initiatives/empowerment-of-women-through-education-a-critical-examination-31111/
2. https://www.bain.com/contentiassets/dd3604b612d84aa48aa48a0b120f0b589532/report_ powering_the_economy_with_her-women_entrepreneurship_in_india.pdf
3. Article "Obstacles of Being A Female Entrepreneur In A Male-Dominated Business", The Hindu, 17/12/2021
4. "https://www.thesangalexpress.com/Encvs/2020/8/9/Role-of-Women-in-Atmanirbhar-Bharat-Self-reliant-India.html.
5. Article "Obstacles of Being A Female Entrepreneur In A Male-Dominated Business", The Hindu, 17/12/2021
6. Article "Obstacles of Being A Female Entrepreneur In A Male-Dominated Business", The Hindu, 17/12/2021
7. https://www.inspirajournals.com/uploads/issues/832472860.pdf